(iv) वक्रोक्ति सम्प्रदाय →

वक्रोक्ति सिद्धान्त भारतीय काव्यशास्त्र का नितान्त मौलिक सिद्धान्त है। वक्रोक्ति काव्य का प्राण है - सारतम अंश है। बिना वक्रोक्ति के काव्य मे काव्यत्व ही विद्यमान नहीं रहता है। उक्ति की वक्रता में बड़ी विचित्रता है। जिसके अभिप्राय की अभिव्यक्ति ही सुधीजनों की विशिष्ट प्रतिभा का द्योतक है। अभिनवगुप्त के अनुसार शब्द की तथा अर्थ की वक्रता से अभिप्राय है इनका लोकोत्तर रूप से अवस्थित होना है -

"शब्दस्य हि वक्रता अभिधेयस्य च वक्रता लोकोत्तीर्णेन रूपेणावस्थान अयमेवासौ अलंकारस्य - अलंकारान्तरभावः।"

साधारण व्यक्ति अपने भावों को प्रकट करने के लिए सीधे साधे साधारण शब्दों का ही प्रयोग करता है। परन्तु प्रतिभाशाली कवि इनसे विलक्षण शब्दों का ही प्रयोग करता है तथा विलक्षण अर्थों की कल्पना करता है। सन्ध्याकाल आने पर प्रतिभावान पुरुष कहता है - दिन भर आकाश में चलने से थककर सूर्य प्रतीची दिशा के प्रासाद में विश्राम करने के लिए जा रहा है। साधारण व्यक्ति की उक्ति है - आप कहाँ से आ रहे हैं? परन्तु शकुन्तला की अनन्य सखी अनुसूया राजा दुष्यन्त से पूछती है - किस देश की प्रजा को आपने अपने विरह से उत्सुक बनाया है? यहाँ साधारण जनों के वाक्यों से

विलक्षण होने के कारण दूसरे वाक्यों में चमत्कार है। यही है उनकी लोकोत्तर रूप से स्थिति उनकी वक्रता। स्पष्टतः वक्रोक्ति अलंकारशास्त्र का मौलिक सिद्धान्त है।

वक्रोक्ति का प्रयोग साहित्य में बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा है। इसके अनेक अर्थ हैं बाण ने 'वक्रोक्ति-निपुण विलासी-जन' का उल्लेख किया है। आचार्य दण्डी ने वक्रोक्ति शब्द का प्रयोग स्वभावोक्ति के विपरीतार्थ में किया है। उन्होंने कहा है कि सामान्यतः श्लेष वक्रोक्ति को चमत्कारपूर्ण बनाता है:-

श्लेषः सर्वासु पुष्णाति प्रायो वक्रोक्तिषु श्रियम्।
भिन्नं द्विधा स्वभावोक्तिर्वक्रोक्तिश्चेति वाङ्मयम्॥

वक्रोक्ति श्लेष पर आधारित भाषा की चमत्कारपूर्ण पद्धति है। यह सामान्य भाषण पद्धति से भिन्न है। भामह ने वक्रोक्ति का प्रयोग इसी अर्थ में किया है। भामह के अनुसार सभी अलंकारों में वक्रोक्ति उपकारक होती है:—

सैषासर्वत्र वक्रोक्तिरनयाऽर्थो विभाव्यते।
यत्नोऽस्यां कविना कार्यः कोऽलंकारोऽनया विना॥

आचार्य भामह ने सभी अलंकारों के मूल में वक्रोक्ति की स्थिति अनिवार्य मानी है जैसे कि-

Scanned with CamScanner

वक्रभिधेयशब्दोक्तिरिष्टा वाचामलंकृतिः।

भामह काव्य में वक्रोक्ति की अनिवार्यता ही नहीं मानते बल्कि उसके बिना काव्य का जो काव्यत्व होता है उसका स्वीकार नहीं करते हैं वे वाणी के सौन्दर्य के लिए वक्रोक्ति को अनिवार्य मानते हुए कहते हैं-

वाचां वक्रार्थशब्दोक्तिरलंकाराय कल्पते।

आचार्य रुद्रट ने वक्रोक्ति को शब्दालंकार के रूप में उद्भावित किया है उनके अनुसार वक्रोक्ति आद्य शब्दालंकार है इसके दो प्रकार होते हैं- (i) श्लेष वक्रोक्ति तथा (ii) काकु वक्रोक्ति। रुद्रट के बाद प्रायः सभी आलंकारिकों ने वक्रोक्ति को शब्दालंकार के रूप में गृहीत किया है। मम्मट, विश्वनाथ आदि आलंकारिकों के ग्रन्थों में इसी वक्रोक्ति की चर्चा हमें मिलती है।

काव्यशास्त्र की सम्प्रदाय परम्परा में वक्रोक्ति सम्प्रदाय की स्थापना का श्रेय आचार्य कुन्तक को दिया जाता है जो वक्रोक्ति को काव्य का मूल तत्व मानकर उसे काव्य की आत्मा के रूप में प्रतिस्थापित करते हैं। आचार्य कुन्तक ने एक विशिष्ट उद्देश्य की दृष्टि से ही अपने ग्रन्थ की रचना की है वह उद्देश्य है:-

लोकोत्तरचमत्कारकारि वैचित्र्यसिद्धये।

Scanned with CamScanner

काव्यस्यायमलंकारः कोऽप्यपूर्वो विधीयते ॥

लोकोत्तरचमत्कारकारि वैचित्र्यसिद्धि अर्थात् अलौकिक या असामान्य आह्लाद को उत्पन्न करने वाले वैचित्र्य का वर्णन यही शब्द 'वक्रोक्ति' के तात्पर्य का द्योतक है। कुन्तक ने वक्रोक्ति का पर्याय विचित्रा अभिधा दिया है। जिससे स्पष्ट है कि वक्रत्व या वक्रभाव "वैचित्र्य" भाव का द्योतक है। कुन्तक ने सचमुच में 'वक्रत्व' और 'वैचित्र्य' को समानभाव का सूचक शब्द माना है और इसलिए वे इन दोनों का अलग अलग प्रयोग अपने तात्पर्य की सूचना के लिए करते हैं। वक्रोक्ति की व्याख्या कुन्तक ने अनेक स्थलों पर की है।

काव्य का उद्देश्य श्रोताओं के हृदय में अलौकिक आह्लाद का उन्मीलन है और यह उन्मीलन तभी सिद्ध हो सकता है, जब शब्द का प्रयोग शास्त्रादिकों में मान्य प्रयोगों से इट हटकर विचित्रता सम्पन्न हो। अथवा लोकव्यवहार में शब्दों का प्रयोग किसी न किसी अर्थ में रूढ़ हो गया है। इन रूढ़ अर्थों से हमारा परिचय इतना अधिक है कि हमारे लिए उनमें किसी प्रकार का आह्लाद नहीं रहता है। अतः उन प्रचलित प्रकार से स्वतन्त्र प्रयोग में ही वैचित्र्य उत्पादन की क्षमता शब्दों में हो सकती है। कुन्तक को यही स्वीकार है। महिमभट्ट ने भी इसी तात्पर्य को अपने ग्रन्थ में समानार्थक शब्दों में ही अभिव्यक्त किया है—

Scanned with CamScanner

वैचित्र्य की सिद्धि के लिए जहां प्रसिद्ध मार्ग का परित्याग कर वहीं अर्थ दूसरे ~~अर्थ~~ ही प्रकार से प्रतिपादित किया जाता है, वही वक्रोक्ति है -

प्रसिद्धं मार्गमुत्सृज्य यत्र वैचित्र्यसिद्धये ।
अन्यथैवोच्यते सोऽर्थः सा वक्रोक्तिरुदाहृता ॥

आचार्य कुन्तक के अनुसार कवि के वक्रव्यापार से सुशोभित तथा काव्य के वेत्ताओं-सहृदयों को आह्लाद करने वाले बन्ध में रखे गये शब्द और अर्थ के साहित्य को ही काव्य कहा जाता है: -

"शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनि ।
बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणी ॥"

इस प्रकार से आचार्य कुन्तक का वक्रोक्तिवाद काव्यशास्त्रीय क्षेत्र में एक महनीय और चमत्कारिक कार्य है। इसके रूपानुशीलन से हमें इसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि वक्रोक्ति काव्य का नितान्त व्यापक, स्थिर तथा सुगूढ तत्त्व है जिसके अस्तित्व के ऊपर कविता में चमत्कारी भाव का संचार होता है। वे अपनी वक्रोक्ति के अन्तर्गत वर्णचमत्कार तथा पदचमत्कार को ही नहीं मानते, प्रत्युत अलंकार, गुण, रीति, रस, ध्वनि जैसे मुख्य काव्यतत्त्वों का भी समावेश मानते हैं।

Scanned with CamScanner